Dr. Madan Paswan - History. | Lecture No. 06

Class: B.A. Part - I (Hons.) P. Ist. | Date: 04.11.2020

Topic: प्राचीन भारत के आधुनिक इतिहासकार | Continue lecture...

भारतीय परम्परा में एकल-व्यक्ति शासन पद्धति पर जोर देकर अपनी शासन व्यवस्था को सही ठहराने का आग्रह दिखता था, जिसमें सारी शक्तियाँ केवल वायसराय के हाथ में होती थीं।

इसी तरह, यदि भारतीय दूसरी दुनिया की समस्याओं से ग्रस्त थे तो ब्रिटिश औपनिवेशिक मालिकों के पास इस दुनिया की देखभाल के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं था। अतीत से स्व-शासन का अनुभव पाए बगैर, यहाँ के निवासी वर्तमान में अपने काम-काज़ को कैसे संभालते?

इन तमाम सामान्यीकरण की मान्यताओं के जरिए वे यह दिखाना चाहते थे कि भारतीय खुद से शासन चलाने के योग्य नहीं हैं।

राष्ट्रवादी दृष्टि और उसका योगदान :—

भारतीय विद्वानों के सामने यह सब एक बड़ी चुनौती के रूप में उभरी, खासकर उनके लिए जिन्होंने पाश्चिमी शिक्षा प्राप्त की थी। वे प्राचीन इतिहास का जो औपनिवेशिक खण्डन था, उससे काफी दुःखी थे और भारतीय सामन्ती समाज के विनष्टीकरण और ब्रिटेन के प्रगतिशील पूँजीवादी समाज के विरोधाभास को लेकर चिंतित भी थे।

कुछ विद्वानों ने भारतीय समाज को सुधारने का न केवल बीड़ा उठाया, बल्कि भारतीय प्राचीन इतिहास की ऐसी पुनर्रचना की जिससे सामाजिक सुधार के साथ-साथ स्वशासन की धारणा मजबूत हो। ऐसा करने वाले अधिकतर इतिहासकार हिन्दू पुनर्जीवन के राष्ट्रवादी विचारों से प्रेरित थे, लेकिन ऐसे भी इतिहासकारों की कमी नहीं थी जिन्होंने तार्किक और वस्तुगत दृष्टि को अपनाया।

दूसरी श्रेणी के इतिहासकार थे — राजेन्द्र लाल मित्र 1822-1891 जिन्होंने वैदिक ग्रन्थ प्रकाशित किए और इण्डो-आर्यंस शीर्षक से एक किताब भी लिखी।

प्राचीन विरासत के प्रेमी होते हुए भी उन्होंने प्राचीन समाज की तार्किक दृष्टि को अपनाते हुए ठोस रूप से बताया कि प्राचीन समय के लोग गोमांस खाते थे।

Continue...